P. R. No.: DL(S)-17/3082/2006-07-08
Regn. No.: DELHIN/2000/2473

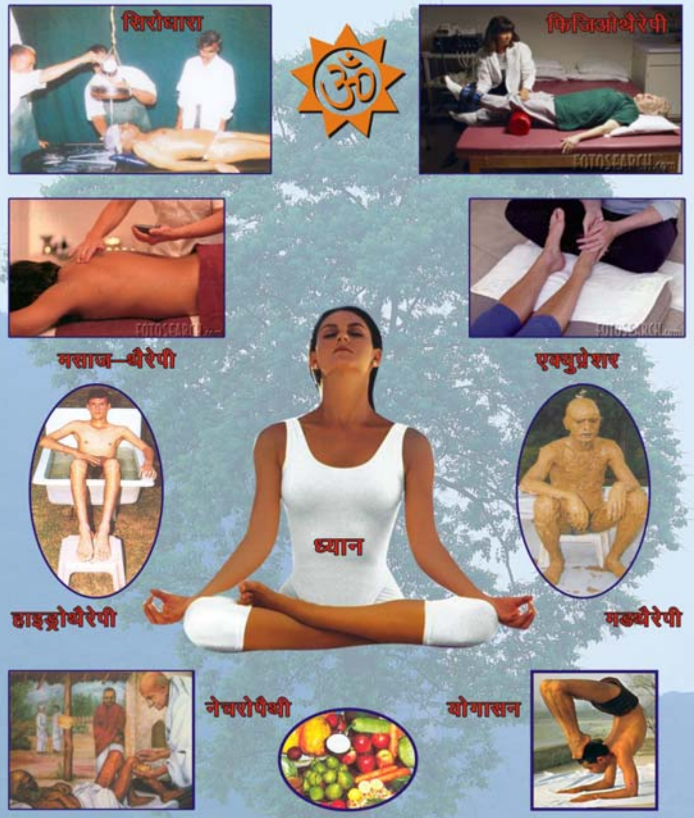

सेवाधाम चिकित्सालय
(मानव मंदिर मिशन के अर्न्तगत संचालित)
जैन मंदिर आश्रम, रिंग रोड,
सराय काले खाँ पेट्रोल पम्प के पीछे, नई दिल्ली – 110 013
फोन – 011–26327911, 9999609878

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित। संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

अगस्त, 2007 मूल्य 5.00 रूपये

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

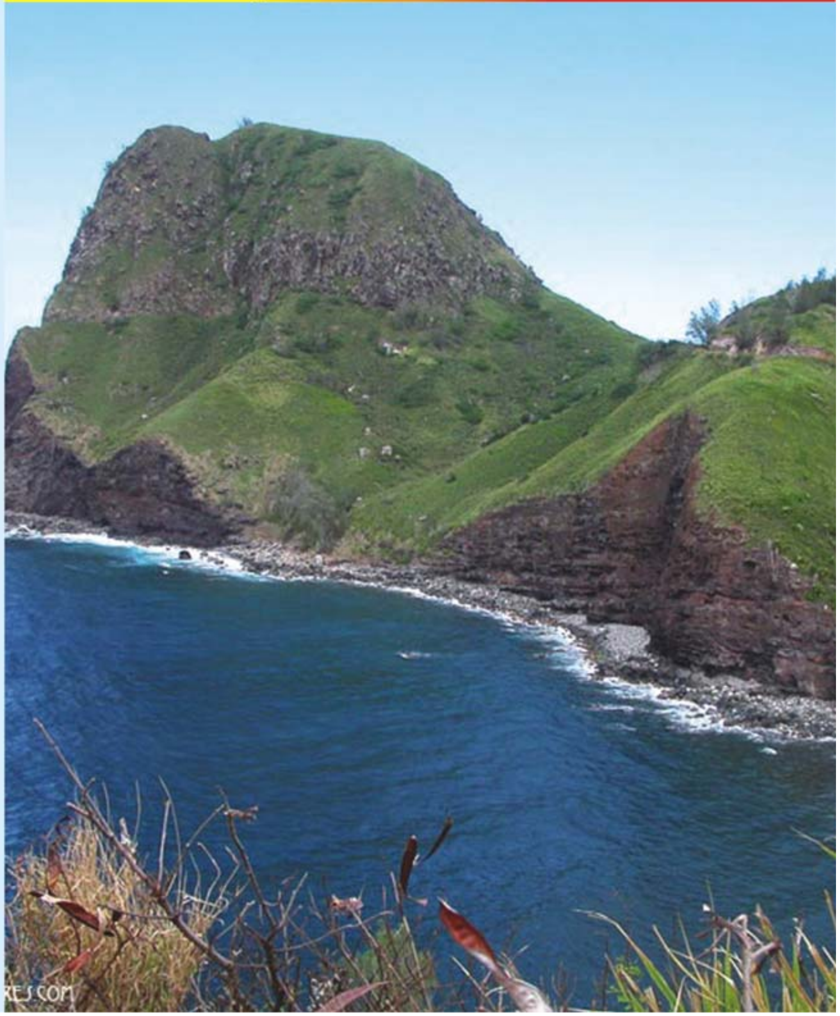

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 08 अगस्त, 2007

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :

श्रीमती निर्मला पुगलिया,
श्रीमती मंजु जैन

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली-110013
फोन नं. : 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail : contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01.	आर्ष वाणी	5
02.	बोध कथा	5
03.	संपादकीय	6
04.	गुरूदेव की कलम से	7
05.	रहस्य	16
06.	टूटते परिवार	17
07.	संकट में निर्भय बनो	19
08.	स्वास्थ्य	20
09.	रहस्यमय अनुभव	23
10.	कविता	26
11.	कहानी	27
12.	कहानी	28
13.	बोलें तारे	29
14.	जानकारी	31
15.	संवेदना समाचार	32
16.	समाचार दर्शन	33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री विरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्यूस्टन, अमेरिका
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास हरीश कुमार सिंगला, लुधियाना
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला, संगरूर
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्यूस्टन
श्री आलोक ऋतु जैन, ह्युस्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
श्री लाला लाजपत राय, जिन्दल - संगरूर

-दुख को धैर्य से सहना चाहिए उसके सामने घुटने नहीं टेकना चाहिए। दुख की तरह सुख को भी सावधानी से बरतना चाहिए। **-आचार्य विनोबा**

आर्ष-वाणी

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुंजइ
अकारिणो त्थ वज्झंति, मुच्चतिकारिणो जणा।

अनेकों बार मनुष्य को व्यर्थ ही दंडित होना पड़ता है। इस संसार में कैसा विचित्र नियम है कि, निरपराधी को दंडित किया जाता है और अपराधी लोग मौज मस्ती मारते हैं।

बोध-कथा

जैसा अन्न, वैसा मन

भीष्म पितामह शर-शय्या पर लेटे हुए थे। युधिष्ठिर महाराज उनसे धर्मोपदेश ले रहे थे। धर्म की बड़ी गंभीर और लाभदायक बातें वे कर रहे थे। तभी द्रौपदी ने कहा-'पितामह! मेरा भी एक प्रश्न है। आप आज्ञा दे तो पूछूं?''

भीष्म बोले-'पूछो बेटी! तुम भी एक प्रश्न पूछो, मैं उत्तर दूंगा।'

द्रोपदी ने कहा-महाराज! प्रश्न पूछने से पूर्व क्षमा चाहती हूं। मेरा प्रश्न कुछ टेढ़ा है। बहुत अच्छा न लगेगा आपको। अगर बुरा लगे तो रूष्ट मत होना।''

भीष्म बोले-'नहीं बेटी! मैं रूष्ट नहीं होता। तुम जो भी चाहो पूछो।''

द्रौपदी ने कहा-'पितामह! आपको स्मरण है, जब दुर्योधन की सभा में दुःशासन मुझे नग्न करने का यत्न कर रहा था? मैं रो रही थी, चिल्ला रही थी। आप भी वहां उपस्थित थे। आपसे भी मैंने सहायता की प्रार्थना की थी। आज आप ज्ञान और ध्यान की बड़ी-बड़ी बातें कह रहे है। उस समय आपका यह ज्ञान और ध्यान कहां गया था? उस समय एक अबला का अपमान आपने कैसे सहन किया?' उसकी पुकार को क्यों नहीं सुना ?''

भीष्म बोले-'तुम ठीक कहती हो बेटी! उस समय मैं दुर्योधन का पाप-भरा अन्न खाता था। वह पाप मेरे शरीर में समाया हुआ था, रक्त बनकर मेरी नसों में दौड़ रहा था। उस समय मैं चाहने पर भी धर्म की बात नहीं कह सका। अब अर्जुन के तीरों ने उस रक्त को निकाल दिया है। पर्याप्त समय से मैं शरों की शय्या पर पड़ा हूं। पाप का अन्न शरीर से निकल गया है, इसलिये धर्म की बात कहने लगा हूं।''

यह है अन्न का प्रभाव! जैसा अन्न, वैसा मन। जैसा आहार, वैसा विचार।

जैसा ही अन्न खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी वाणी होय।।

सम्पादकीय

गुरू का स्थान होता है सर्वोपरि

गुरू ऐसी जड़ी बूटी है जो मरते हुए को जिलादे। गुरू को गोविंद से भी उंचा दर्जा दिया गया है। तभी तो हमारे संतों ने कहा है-**'गुरू गोविंद दोनों खड़े किसके लागूं पांव बलिहारी गुरूदेव की गोविंद दिया बताय।''**

अर्थात् गोविंद से भी ज्यादा महत्व गुरू को दिया गया है। क्योंकि गोविंद को बताने वाले गुरू ही होते हैं। गुरू के बिना साधारण जन तो भटकते रहते हैं लेकिन सही रास्ता कौन बताएं? अभी गुरू पुर्णिमा का उत्सव मनाया गया। सबको गुरूदेव श्री का मार्गदर्शन मिला था। गुरू का मार्गदर्शन तो मिल सकता है आखिर तो अन्तःकरण अपना ही जगाना होता है। सबसे पहले गुरू की पहचान करना सीखें। गुरू अगर असली नहीं है तो भटका भी सकते है। असली और नकली की पहचान किए बिना लाभ के बदले नुक्शान भी हो सकता है। गुरू तीन तरह के होते हैं। इंसान का सब से पहला गुरू माता, पिता होते हैं तो बचपन से सद्संस्कार दाता पिता को मानते हैं लेकिन पशुपक्षियों को कौन सिखाता है? वे भी तो समय आने पर सबकुछ सीख जाते हैं। लेकिन मनुष्य और पशु-पक्षियों के जीवन विकास में बहुत बड़ा अंतर है। गाय का बच्चा पैदा होते ही दो चार घंटे बाद अपने आप खड़ा हो जाता है। दूघ भी पीलेता है, क्या मनुष्य का बच्चा भी जन्मते ही खड़ा हो जाता है या दूध पीलेता है? पशु पक्षी का बच्चा जिंदगी भर मलोत्सर्ग जहां खड़ा होता है वही करता है पर मनुष्य के बच्चे को थोड़ा बड़ा होते ही बॉथरूम या टॉयलेट में जाना सिख दिया जाता है। और भी अनेक तरह के संस्कार माता पिता देते हैं इसलिए प्राथमिक गुरू होते हैं माता-पिता। उसके बाद गुरू होते हैं शिक्षक। शिक्षक का भी कम महत्व नहीं होता। क्योंकि लौकिक विद्याओं के दाता वे ही होते हैं। जीवन में लौकिक विद्या भी बड़ी उपयोगी और जरूरी होती है। लोकोत्तर या आध्यात्मिक गुरु का दर्जा तो बहुत उंचा होता है ही। वे तो हमारी आंखे खोलते हैं अंतर चक्षु उद्घाटित करते हैं। यद्यपि आज गुरू का सही मूल्यांकन नहीं होता है। उल्टा माता पिता के लिए कहा जाता है कि उन्होंने हमारा पालन पोषण किया तो कौन सा हमारे पर अहसान है। उन्होंने पैदा किया तो, पालन पोषण करना उनका फर्ज था। शिक्षक हमको पढ़ाते हैं तो उसके बदले उनको पैसे मिलते हैं। छात्रों पर कौन सा अहसान करते हैं। धर्म गुरू अगर हम को ज्ञान देते हैं तो कोई उपकार नहीं करते। उनको भी बहुत भारी भीड़ चाहिए। या शिष्य चाहिए बिना मतलब कोई कुछ नहीं करता। आज का गुरू शिष्य संबंध बिल्कुल बेतुका है। कहां है शिष्य का समर्पण और कहां है गुरू का वात्सल्य भाव। दोनों तरफ सौदेबाजी है। एकलव्य सा समर्पण आज संभव है क्या ? यह होता है गुरू शिष्य का पवित्र रिश्ता। इतना गुरू के साथ लगाव हो तभी गुरू पूर्णिमा महोत्सव अपना महत्व रखता है।

○निर्मला पुगलिया।

कोऽहं का उत्तर है सोऽहं

○ गुरुदेव की कलम से

आत्म-तत्व को जानना/ समझना बहुत कठिन है। जो तत्व न आखों से देखा जा सके, न कानों से सुना जा सके, न नासिका से सूंघा जा सके, न जीभ से चखा जा सके, न हाथ आदि द्वारा जिसका स्पर्श किया जा सके, न मन या बुद्धि का जो विषय बन सके, उसे मानना या जानना या समझना कोई आसान काम तो नहीं है। इस जटिल स्थिति में जो आत्मा के अस्तित्व पर विश्वास करते हैं, उनके सामने अनेक प्रश्न ऐसे खड़े रह जाते हैं, जिनका बुद्धि गम्य उत्तर नहीं मिल पाता है। किन्तु यह स्थिति केवल आस्तिकों की, आत्मा के अस्तित्व को स्वीकारने वालों की ही नहीं हैं, जो अपने को नास्तिक कहते हैं, जिन्हें आत्मा-परमात्मा आदि में विश्वास नहीं है, उनके सामने ऐसे अनेक प्रश्न रह जाते हैं, जिनका निश्चित उत्तर उनके पास भी नहीं है। कहा जा सकता है आज जिस भूमिका पर हम हैं, उस पर, न निश्चय से आस्तिक कोई संतोषजनक उत्तर दे सकता है और न कोई नास्तिक भी। इसका कारण क्या है ?

आत्मा अरूप है

इसका प्रमुख कारण है आत्मा का अरूप होना। आस्तिकों कहना है जिस आत्मा का स्वरूप ही अरूप है, उसे कैसे देखा जा सकता है, कैसे सुना जा सकता है, कैसे सूंघा जा सकता है, कैसे चखा जा सकता है और कैसे उसका स्पर्श किया जा सकता? यह इन्द्रियों का विषय नहीं बन सकता, अभूर्त जो है-

णो इंदिय गेज्झ अमुत्तभावा
अमुत्तभावा वि य होइ णिच्चं।।

इन दो पदों में भगवान महावीर ने दो महत्वपूर्ण उद्घोषणाएं की हैं। पहली, कि आत्मा अमूर्त हैं, इसलिए इंद्रियां इसे ग्रहण नहीं कर सकती। उसका कोई रूप या आकार नहीं है। जबकि इंद्रियों का विषय वही पदार्थ बन सकता है जिसका अपना कोई रूप या आकार हो। मन या बुद्धि का विषय भी आत्मा नहीं है-**सव्वे सरा नियट्टंति**

तक्का जत्थ न विज्जई
मई तत्थ न गाहिया

सारे शब्द उस आत्म-जगत से टकराकर वापस लौट आते हैं, तर्क की वहां पहुंच नहीं है और न ही बुद्धि का वहां प्रवेश है। 'अरूवी सत्ता' अरूप सत्ता है वह। फिर इंद्रियां, मन, बुद्धि, इनका वहां प्रवेश हो कैसे ? समझ के लिए हमारे पास जो साधन हैं, वे इंद्रियां, मन और बुद्धि ही हैं। भगवान महावीर कहते हैं, इनके द्वारा आत्मा का ग्रहण संभव नहीं है। श्रीमद् भगवद्-गीता भी इसी तथ्य की ओर इशारा करती है-

इंद्रियाणि पराण्याहु, इन्द्रियेभ्यो परं मनः
मनसस्तु परा बुद्धिः यो बुद्धे परतस्तु सः

अर्जुन, इंद्रिया पर हैं। उनसे भी पर है मन। मन से पर है बुद्धि और जो बुद्धि से भी पर है वह 'वह' है। यानि जो इंद्रिया मन और बुद्धि से परे है वह है आत्मा। आस्तिक दर्शन की आत्मा के बारे में यह पहली उद्घोषणा है।

दूसरी उद्घोषणा में भगवान फरमाते हैं-अमुतभावा वि य होई णिच्चं-अमूर्त पदार्थ सदा नित्य होते हैं, शाश्वत होते हैं। इस उद्घोषणा का अर्थ है आत्मा अरूप तो है ही, ध्रुव नित्य और शाश्वत भी है। इसीलिए आत्मा का न जन्म होता है, न मृत्यु होती है, न भेदन होता है, उसे न कोई जला सकता है, न कोई मार सकता है-सन छिज्जइ, न भिज्जइ, न डज्झइ, न हम्मइ। भगवत्गीता की घोषणा का स्वर भी यही है-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारूतः

इस आत्मा को न शस्त्र छेदन कर सकते हैं, न अग्नि जला सकती है, न जल इसे गला सकता है और न हवा इसे सुखा सकती है। इसका अर्थ यह है कि आत्मा अरूप होने के कारण रूप या मूर्त पदार्थों में पाए जाने वाले विकार उसमें नहीं होते। मूर्त पदार्थों के इसी विकार-धर्म को ध्यान में रखते हुए भगवान महावीर ने इनके लिए एक शब्द दिया-वह है पुद्गल। पुद्गल का अर्थ है जिसमें गलन-मिलन निरंतर होता हो। पुद्गल रूपवान होता है। वही इंद्रियों का विषय बनता है। उसका छेदन भेदन हो सकता है, उसको जिलाया-मिटाया जा सकता है, उसे बनाया भी जा सकता है। इस प्रकार जन्म-मरण, निर्माण विनाश आदि पुद्गल में होते हैं, शरीर में होते हैं। आत्मा इन सबसे परे हैं।

अनुभव-गम्य है आत्मा

जोधपुर शहर का प्रसंग है। एक प्रोफेसर साहिब मेरे पास आए, जो जीव विज्ञान में लंदन से उंची डिग्री हासिल करके आए थे। अपनी उंची पढ़ाई का अहंकार उनकी हर बात में झलक रहा था। अपने प्रश्नों की भूमिका बांधते हुए उन्होंने कहा-मेरे हर प्रश्न का उत्तर बिल्कुल साफ-सुथरा और तर्क-सम्मत होना चाहिए। गोल मोल उत्तर और शास्त्रों की दुहाई हम नहीं मानने वाले हैं। अब वह समय लद गया है कि आप संत लोग कुछ भी कह दें, हम

बंद आंखों से उसे स्वीकार कर लें। हमारे पूर्वज अनपढ़ होते थे, संत-पुरूषों के प्रति श्रद्धाशील भी। इसलिऐ आप लोग जो भी कहते वे उसे श्रद्धा वश स्वीकार कर लेते। अब हम पढ़े-लिखे हैं। तर्क-संगत उतर को ही हम मान सकते है अन्यथा नहीं।

मैं उन प्रोफेसर साहिब को मौन सुनता रहा। लंगी चौड़ी भूमिका के बाद वे बोले-क्या आपने आत्मा का अनुभव किया है ? मैं उत्तर में कुछ कहूं, उससे पहले ही वे फिर बोले- मुझे उत्तर केवल हां या ना में चाहिए। मैंने कहा- आत्मा का अनुभव तो प्रतिक्षण होता है। जिसका आपको अनुभव हो रहा है क्या आप मुझ भी उसे दिखा सकते है? उनका अगला प्रश्न था।

आत्मा का तो अनुभव ही किया जा सकता है, वह कोई देखने-दिखाने की चीज तो नहीं मैंने कहा।

देखिये, आप फिर गोल मोल उत्तर देने लग गए, वह बोले। हम आज विज्ञान के युग में जीते हैं। हमारी शिक्षा के साथ विज्ञान जुड़ा है। विज्ञान के वातावरण में ही हम पले-पुसे हैं। इसलिए इन उत्तरों को मानने वाले नहीं। हम तो उसी वस्तु के अस्तित्व को मान सकते हैं, जिसे आप हमको स्पष्ट रूप से दिखा सकें।

जिस मकान में ठहरे हुए थे, उसके दरवाजे के ठीक सामने एक पीपल का पेड़ था। हवा से पेड़ के पत्ते हिल रहे थे। मैंने उन पत्तों की ओर इशारा करते हुए उनसे पूछा- इन पत्तों को कौन हिला रहा है ?

हवा, उनका उत्तर था। क्या आप उस हवा को देखते हैं ? मेरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा-नहीं, किन्तु स्पर्श के द्वारा उनका अनुभव होता है। क्या उस अनुभव को अथचा अनुभव में आने वाली वस्तु को हाथ पर रख कर हमें भी दिखा सकते हैं ?

यह कैसे संभव है, वे बोले। हवा का तो स्पर्श के द्वारा अनुभव ही किया जा सकता है। उसे दिखाया नहीं जा सकता।

मैं अपनी पूर्व धारणा में थोड़ा-सा संशोधन करता हूं, उन्होंने कहा जो देखी-दिखाई न जा सके, किन्तु जिसको सुना जा सके, सूंघा जा सके, स्पर्श द्वारा जिसका अनुभव किया जा सके, उन सबका अस्तित्व होता है। किन्तु आत्मा का अस्तित्व फिर भी कैसे माना जा सकता है। आत्मा न शब्द की तरह सुनी जा सकती है, न गंध की तरह सूंघी जा सकती है, न हवा की तरह उसके स्पर्श का अनुभव किया जा सकता है। फिर आत्मा के अस्तित्व को कैसे माना जा सकता है?

यह भी मानेंगे आप, मैंने कहा। इतना तो मान गए, जो देखी-दिखाई न जा सके, उसका भी अस्तित्व हो सकता है। अब यह बताएं-जो दीख रहा है, उसे देखने वाला कौन है ? शब्दों को सुनने वाला कौन है ? गंध, रस और स्पर्श का अनुभव करने वाला कौन है?

उन्होंने कहा- इसका उत्तर तो बहुत साफ है। इंद्रियां शब्द, रूप आदि विषयों को ग्रहण करती हैं, उनके पीछे होता है मन। मन ही देखने, सुनने, अनुभव करने वाला होता है। अगर मन अन्यत्र हो तो आंख रूप को देखते हुए भी नहीं देखती हैं, कान शब्द को सुनते हुए भी नहीं सुनते है। तो यह मन ही है तो देखने-सुनने वाला है।

मन है देखने सुनने वाला, अनुभव करने वाला, उस मन का अस्तित्व क्या विज्ञान से सिद्ध किया जा सकता हैं क्या मन आंख कान आदि इंद्रियों का विषय हो सकता है? क्या अदृश्य हवाकी तरह इस मन का स्पर्श के द्वारा अनुभव किया जा सकता है ? अगर नहीं, तो आप विज्ञान वाले मन का अस्तित्व कैसे मान सकेंगे ?

इस बार प्रोफेसर साहिब कुछ असमंजस में लगे, मैंने फिर कहा, इंद्रियां मन के सहयोग से ही काम करती है, किन्तु जब इंद्रियां काम न भी कर रही होती है, तब भी मन तो होता है। न आंख देख रही होती है,न कान सुन रहा होता है, न नाक सूंघ रहा होता है, न जीभ चख रही होती है, न शरीर स्पर्श की अनुभव कर रहा होता है, फिर भी मन अपना काम कर रहा होता है। क्या होता है यह मन ? इसे मान लेने पर इसे कैसे सिद्ध करेंगे आप? किन्तु मन के उपर किसी चेतन को मानने की क्या जरूरत है, प्रोफेसर साहिब बोले।

जैसे इंद्रियां न होने पर भी मन होता है, वैसे ही मन न होने पर भी हम होते हैं, मैनें कहा। जब हम नींद में होते हैं, तब मन भी सक्रिय कहां होता है। फिर भी भीतर बहुत कुछ सक्रिय होता है। बहुत कुछ क्या शरीर का पूरा तंत्र ही सक्रिय होता है। केवल इंद्रियां और मन निष्क्रिय होते हैं, नींद में इनके अलावा पूरा शरीर-यंत्र कार्यरत होता है।

किसी चोट आदि के कारण कई बार आदमी बेहोश हो जाता है। बड़े आपरेशन में डाक्टर मरीज को बेहोश कर देते है। बेहोशी की उस हालत में न इंद्रिया काम करती हैं, न मन और बुद्धि। फिर भी कोई है जो पूरे शरीर यंत्र को कार्यशील बनाए रखता है। जिसके होने पर अस्वस्थ, रूग्ण, बेहोश व्यक्ति भी जिंदा होता है, क्रियाशील होता है, प्राणवान् होता है। और जिसके न होने पर मन, इंद्रियां और पूरा शरीर तंत्र स्वस्थ होने पर भी निष्क्रिय और निष्प्राण हो जाता है। वह कौन हो सकता है ? उसे आप किस शब्द से पुकारना पसंद करेंगे।

प्रोफेसर साहिब ने अपने ललाट पर आए पसीने को पोंछते हुए कहा- वह जो भी है, अगर वही इस शरीर यंत्र को और इसके पूरे तन्त्र को सक्रिय और प्राणवान रखता है, तो वह शरीर के भीतर कहीं मिलता क्यों नहीं? हमने शरीर के एक एक अंग को काट-काट कर देखा है, भीतर चेतन अथवा आत्मा नाम का कोई तत्व मिला ही नहीं। जो चीज भीतर हो, और वह मिले नहीं, यह कैसे हो सकता है।

वीणा में कहां होता है संगीत

मैंने कहा-एक वैज्ञानिक एक बार एक संगीत समारोह में गया। उसमें वीणा वादन का कार्यक्रम उसे खूब पसंद आया। वह सोचने लगा, इतनी मधुर संगीत लहरी इस वीणा में कहां से आ रही है। उस संगीत लहरी का पता लगाने के लिए वह वीणा खरीद लाया। वीणा के तारों की झनझनाहट में से ही वह मधुर संगीत लहरी प्रस्फुटित होती थी। उसने पहले उन तारों के टुकड़े टुकड़े किए पर वह संगीत लहरी कहीं नहीं मिली। वह इस निर्णय पर पहुंचा कि संगीत लहरी वीणा में से नहीं, कहीं और से आ रही थी। अगर वह वीणा में से ही आती, तो वीणा में जरूर मिलती। अब प्रोफेसर साहिब आप ही बताएं, क्या वह संगीत लहरी वीणा में से ही नही आ रही है? यदि उसमें से ही आ रही है तो उन वैज्ञानिक महोदय को उसके भीतर मिली क्यों नहीं? प्रोफेसर साहिब मौन थे। मैंने फिर कहा-आपका तर्क है, आत्मा अगर हमारे भीतर है तो शरीर के एक एक अंग की चीरफाड़ में वह कहीं भी मिलती क्यों नहीं। जाने दें आप एक बार आत्मा के प्रश्न को, मन का अस्तित्व तो आप बुद्धि जीवी भी स्वीकार करते हैं। मै जानना चाहता हूं इस तन की शल्य क्रिया में कहीं भी यह मन और उसका चिंतन मिलता है ? शरीर के अन्य अंगों उपांगों की तरह शल्श क्रिया में न मन मिलता है, न बुद्धि मिलती है, न सोच का कोई रासायनिक प्रक्रिया का विश्लेषण विज्ञान के पास है फिर आत्मा के अस्तित्व पर ही संशय क्यों होता है ? जबकि आत्मा के अस्तित्व के समर्थन में सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब मन, बुद्धि, इंद्रिया काम न कर रही होती हैं, तब भी कोई इस शरीर यंत्र का संचालन कर रहा होता है और पूरा शरीर यंत्र तथा मन बुद्धि का तंत्र पूर्णतया स्वस्थ सक्रिय होने पर भी जिसकी अनुपस्थिति में सब कुछ ठप्प हो जाता है, निष्क्रिय और निष्प्राण हो जाता है, वह आत्मा नहीं तो और क्या हो सकती है ?

प्रोफेसर साहिब मेरी इस दलील पर काफी आश्वस्त से थे। फिर भी यही कहा-मुझे आपने सोचने के लिए बहुत कुछ दिया है, मैं इस पर पूरी तरह से विचार करूंगा।

शरीर रथ, आत्मा रथी

उपनिषद् के ऋषियों ने आत्मा और शरीर के संबंध का बहुत सुंदर विश्लेषण देते हुए कहा-

आत्मानं रथिनं विद्धि, शरीरं रथ मेव तु
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि, मनः प्रग्रह मेव च
इन्द्रियाणि हयान्याहु, विषयान् इंद्रिय गोचराम्।

आत्मा है रथी-रथ का मालिक। शरीर है रथ। बुद्धि है सारथि। मन है लगाम। इंद्रिया है घोड़े। इन्द्रिय विषय है चारागाह, जहां इंद्रियां चरती है। इस रथ के रूपक से ऋषिमनीषियों ने आत्मा

और शरीर के समूंर्ण संबंधों का बहुत स्पष्ट चित्र हमारे समझ प्रस्तुत किया है। शरीर रथ है, रथी नहीं, मालिक नहीं, यह किसी के काम कैसे आएगा ? बल्कि रख-रखाव के अभाव में धीमे-धीमे वह जीर्ण-शीर्ण होकर स्वयं बिखर जाएगा। मालिक को अपने जीवन-सफर के लिए रथ चाहिए। वह रथ है शरीर। रथ को अपने उपयोग के लिए मालिक चाहिए। वह मालिक है आत्मा। आत्मा जब शरीर रथ को छोड़ देता है, तब रथ सही-सलामत होते हुए भी बेकार हो जाता है। रथ को खींचने के लिए घोड़े चाहिए। वे घोड़ें हैं इंद्रियां। इंद्रियां ही तो इस शरीर-रथ को निरंतर दौड़ाती रहती है। घोड़ों पर नियंत्रण रखने के लिए लगाम की जरूरत होती है। यह मन ही लगाम है। सारथि लगाम को का हाथ में रखे हुए अपने मालिक के आदेश के अनुसार रथ का संचालन करता है। वह सारथि है बुद्धि, जो मन-लगाम को हाथ में लिए इंद्रिय घोड़ों का मालिक की आज्ञा के अनुसार संचालन करती है। इस रूपक के द्वारा आत्मा और शरीर का स्पष्ट चित्र उजागर हो जाता है। और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा और शरीर एक नहीं, किन्तु भिन्न है।

आत्मा और शरीर का भेद-ज्ञान

आत्मा और शरीर भिन्न भिन्न हैं, यह ज्ञान हमारे अस्तित्व के साथ सहज रूप से जुड़ा हुआ है। अस्तित्व की अभिव्यक्ति के समय वह हमारी वाणी में अनायास प्रकट भी होता है। जब हम कहते हैं-मेरा शरीर अभी अस्वस्थ चल रहा है, इस अभिव्यक्ति में शरीर से भिन्न मेरा अस्तित्व है, यहां स्वंय प्रकट हो जाता है। जिसे हम कहते हैं-मेरा वस्त्र, यानि मैं अलग हूं, वस्त्र अलग है, मेरा मकान यानि मैं अलग हूं, मकान अलग हैं उसी तरह मेरा शरीर, इसमें स्वयं स्पष्ट है कि मैं अलग हूं और मेरा शरीर अलग है। मेरा शब्द संबंध सूचक है। यह दो वस्तुओं के बीच संबंध की सूचना देता है। यदि शरीर ही मैं होता तो मैं और शरीर के बीच संबंध सूचक 'मेरा'शब्द के प्रयोग की आवश्यकता ही नहीं होती । किन्तु ऐसा होता है, मैं और शरीरका संबंध बनाने के लिए मेरा शब्द का प्रयोग करना पड़ता है, यह स्वंय इस बात का प्रमाण है कि आत्मा और शरीर एक नहीं, अलग-अलग हैं।

आत्मा ही परमात्मा

अब प्रश्न होता है, परमात्मा क्या है ? 'परमात्मा' दो शब्दों के जोड़ से बना है। परम+आत्मा-परमात्मा। आत्मा की परम अवस्था का नाम है परमात्मा। आत्मा अपने में शुद्ध, बुद्ध, सच्चिदानन्दस्वरूप है। उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चरित्र, अनन्त बल है। वह सर्वज्ञ है, सर्वदशी है किन्तु अभी वह आत्मा कर्म-आवरणों से ढकी हुई है। कर्म-बंधनों में होने के कारण वह अपेन शुद्ध स्वरूप को भूलकर मोह-माया, ममता के घेरे फंसी हुई है। इस मोह माया ममता के कारण ही वह संसार चक्र में भटक रही है। आत्मा के जन्म-मरण

का कारण भी यही है। वैसे तो आत्मा अजन्मा है, अमर है, ध्रुव नित्य, शाश्वत है। किन्तु मोह-आवरणों के कारण वह जन्म मरण करती है। इन आवरणों के दूर होने पर वह अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर लेती है। आत्मा के उस शुद्ध स्वरूप का नाम ही परमात्मा है। जन्म-मरण करने वाली आत्मा है, जीवात्मा व जन्म-मरण से मुक्त आत्मा का नाम है परमात्मा।

अकबर के तीन सवाल

कहते हैं एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा- तुम हिंदुओ का भगवान रहता कहां है, वह मिलता कैसे है, वह करता क्या है, इन तीन प्रश्नों के उत्तर मुझे सात दिनों के भीतर-भीतर मिलने चाहिए। अगर सात दिनों में तुम उत्तर नहीं दे पाते हो तो तुम्हारी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जाएगी।

बीरबल बोला-जहांपनाह, आत्मा-परमात्मा से संबंधित इन प्रश्नों का उत्तर तो आप किसी संत महात्मा फकीर से पूछिए। मैं इन प्रश्नों के बारे में क्या जानूं। मैं तो राज-काज से संबंधित सवालों का जबाव दे सकता हूं। अब रही संपत्ति की बात, वह तो आपकी ही है, जब चाहे ले लें।

नहीं, बीरबल, इन सवालों के जवाब मुझे तुमसे ही लेना है, और उत्तर सात दिनों में मिल जाने चाहिए।

बेचारा बीरबल, बोले तो क्या बोले। वह समझ गया, बादशाह मुझे तथा मेरे धर्म को अपमानित करना चाहता है। अपना-सा मुंह लेकर घर आ गया। चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभर आई। तीन-चार दिनों के बाद तो नींद और भूंख भी गायब हो गई।

बीरबल के पुत्र ने यह देखकर पिता से चिंता का कारण पूछा। ज्यादा आग्रह करने पर बीरबल ने पूरी स्थिति की जानकारी देते हुए कहा-बेटे, तीन दिनों बाद अगर मैं उत्तर न दे पाया तो बादशाह अपनी पूरी इज्जत को मिट्टी में मिला देगा। यही चिंता मुझे खाए जा रही है।

आप व्यर्थ में ही चिंता का भार ढ़ो रहे हैं, बेटे ने कहा। इन प्रश्नों के उत्तर तो मैं ही दे दूंगा। मैं दादाजी के साथ सत्संग में जाता रहता हूं। वहां मैंने संत-पुरूषों के मुख से आत्मा-परमात्मा पर खूब सुना है। इसलिए इन प्रश्नों के उत्तर मैं जानता हूं। आप चिंता मुक्त हो जाएं, आराम से खाएं सोएं। आठवें दिन बादशाह से इतना-सा कह दें कि इन प्रश्नों के उत्तर तो इतने सरल है, कि मेरा बेटा ही देगा।

आठवें दिन दरबार भरा था। अनेक लोगों के मन में बीरबल के उत्तरों के प्रति उत्सुकता थी। कुछ ऐसे भी थे जिनकी नजर बीरबल की इज्जत पर थी। समय पर बीरबल दरबार

में हाजिर हुआ। अकबर ने अपने प्रश्नों के उत्तर मांगे। बीरबल ने कहा, जहांपनाह जब मेरे बेटे ने इन प्रश्नों के बारे में सुना, तो वह बोला-इतने सीधे सरल प्रश्नों का उत्तर तो मैं ही दे दूंगा। आप इनके लिए बिल्कुल तकलीफ न करें। इसलिए इन सवालों के उत्तर मेरा बेटा ही देगा।

लड़के को बग्घी भेजकर बुलाया गया। कहते हैं लड़का बीरबल से भी ज्यादा तेज था। बादशाह को अभिवादन करके वह एक ओर खड़ा हो गया। बादशाह ने उससे कहा-अपने पिता के स्थान पर क्या तू उत्तर देगा? बालक ने निर्भयता से हामी भर ली। तो बोलो क्या उत्तर हैं मेरे प्रश्नों का ?

बादशाह अपने प्रश्नों को दुहराए, उससे पहले ही बालक बोल उठा- मैं आपके प्रश्नों का जवाब जरूर दूंगा, किन्त दरबार का अपना कुछ शिष्टाचार भी होता होगा। आए हुए अतिथि को आसन देना, खाने-पीने की मनुहार करना, ये साधारण शिष्टाचार हर नागरिक के लिए करणीय होते है। फिर यह तो बादशाह का दरबार है और मैं अपने आप से नहीं आया हूं। मुझे बुलाया गया है। प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए आपने स्वंये आमंत्रित किया है। क्या आसन देना दरबार का शिष्टाचार नहीं?

बादशाह बेचारा सकपका गया। उसने उसे बैठने के लिए आसन की ओर इशारा किया। इतने में वह फिर बोल उठा। आप गुरू-भाव से प्रश्न पूछ रहें है या शिष्य भाव से। आप जानते हैं-शिष्य प्रश्न पूछता है और गुरू से उत्तर लेता है। इसलिए गुरू का आसन उंचा होता है, शिष्य का नीचा। अब आप स्वंय विचार लें, मेरा आसान कहां होना चाहिए।

उसकी तेज-तर्रार वाणी सुनकर बादशाह अवाक् रह गया। उसने उसकी बृद्धि का लोहा मन-ही-मन मान लिया। उसके बैठने के लिए बादशाह को अपने से भी उंचा आसन देना पड़ा। अब उसका आसन था उंचा, बादशाह का नीचा। पूछा उससे, क्या पीना पसंद करोगे ठंडा या गरम, दूध-चाय या शरबत। वह बोला-मैं अभी बालक हूं। बच्चों को दूध ही पसंद होता है, इसलिए मेरे लिऐ एक कटोरा दूध मंगवा दीजिए।

उसके सामने तत्काल दूध आ गया। हाथ में कटोरा लेकर वह दूध में झांक-झांककर देखने लगा। बादशाह ने यह देख कर पूछा-अरे बालक, दूध में यों झांक-झांककर क्या देख रहे हो? भोला सा बनते हुए उसने कहा-मैंने सुना है दूध में घी होता है। मैं देख रहा हूं वह घी कहां है। मुझे तो वह कहीं भी नजर नहीं आ रहा है।

बादशाह हंसे। बोले-यह ठीक है कि घी दूध में ही होता है। किन्तु वह यों नजर थोड़े ही आता है। उस घी को पाने के लिए पहले दूध को जमाकर दही बनाया जाता है। फिर दही को बिलोया जाता है। तब उसमें से मक्खन निकलता है। मक्खन को आग पर तपाया जाता

है। तपने पर छाछ का अंश अलग हो जाता है। तक कहीं घी प्रकट होता है। इतनी प्रक्रिया के बाद घी मिलता है। ऐसे दूध में घी थोड़े दिखाई पड़ता है।

बहुत ठीक बताया बादशाह आपने, बच्चा बोला। अब आप अपने सवाल एक-एक करके पूछते जाएं।

अकबर बोलें- पहला सवाल यह है कि परमात्मा रहता कहां हैं?

राजन् जैसे दूध में घी रहता है, वैसे ही हर आत्मा में परमात्मा विराजमान है, बच्चे ने कहा।

दूसरा सवाल-अगर हर आत्मा में परमात्मा होता है तो वह मिलता कैसे है?

जैसे दूध को पहले जमाया जाता है, फिर मथा जाता है, फिर तपाया जाता है, तब घी मिलता है, वैसे ही इस मन को जप-ध्यान से जमाया जाता है, ज्ञान से मथा जाता है, तप से तपाया जाता है, तब आत्मा में से परमात्मा प्रकट होता है।

अकबर दोनों उत्तरों से बहुत खुश हुए। बोले-मेरा तीसरा सवाल है वह परमात्मा करता क्या है?

वह करता क्या है? वह बोला, बादशाह साहिब क्या अभी तक आपके समझ में नहीं आया? वह उपर वाले को नीचे करता है और नीचे वाले को उपर। यह उसी की कृपा का फल है। जो मुल्क के बादशाह होते हुए भी आज आपका आसन नीचा है और मेरा आसन उंचा। मैं उंचे आसन पर बैठा हूं और आप नीचे आसन पर। इतना होते हुए भी आप मुझे पूछ रहे हैं कि वह करता क्या है।

बादशाह को काटो तो खून नहीं। इतने तीखे उत्तर आशा उन्हें नहीं थी। किन्तु बोलें तो भी क्या बोलें। मन ही मन कड़वी घूंट को पीते हुए वह बोले- बच्चे, हम तुम्हारे उत्तरों से बहुत खुश है। और मान गए कि बीरबल से भी ज्यादा तेज बीरबल का बेटा है। अकबर ने उसे ढेर सारा ईनाम भी दिया।

<u>जप-जप से मिलते हैं परमात्मा</u>

कथा का निष्कर्ष यह है कि हर आत्मा में परमात्मा है। जप-तप से वह उपलब्ध होना संभव है। जब तक उस अवस्था को हम प्राप्त नहीं होते है, अपने-अपने कर्म के अनुसार हमें अपने फल मिलते रहते हैं।

उस परमात्म-तत्व को पहचानने के लिए सबसे पहले आत्म-तत्व को जानना जरूरी है। वस्तुतः आत्मा से भिन्न परमात्मा है ही नहीं। हमें आत्मा का ज्ञान नहीं, इसीलिए परमात्मा की पहचान नहीं है। आत्म ज्ञान होने के साथ ही परमात्मा स्वंय उपलब्ध हो जाता है। आत्म-ज्ञान की कक्षा का पहला पाठ यह है आत्मा पर हमारी अविचल श्रद्धा हो। हमारा यह

दृढ़ विश्वास हो मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं। न मैं शरीर हूं, न इंद्रिया, न मैं मन हूं, न मैं बुद्धि, मैं केवल आत्मा हूं, केवल आत्मा।

उस आत्मा को न आंखों से देखा जा सकता है, न कानों से सुना जा सकता है, न नाक से सूंघा जा सकता है, न जीभ से चखा जा सकता है, न हाथ आदि से उसका स्पर्श किया जा सकता है। उसका केवल अनुभव किया जा सकता है।

केवल अनुभव का विषय है वह आत्मा। हम उसका अनुभव करने की कोशिश करें। अवश्य होगा हमें उसका अनुभव। वह अनुभव ही सच है। वही मैं हूं, वही मैं हूं। कोहं का ही उत्तर है सोहं, सोहं, सोहं।

<u>रहस्य</u>

दुनियां के अनोखे पेड़

अमेरिका में दूध देने वाला पौधा पाया जाता है इसे 'गउ' वृक्ष कहते हैं। यह वृक्ष एक सौफुट या इससे अधिक उंचा होता है। दूध प्राप्त करने के लिए इसके तने में सुराख करके बरतन नीचे रख दिया जाता है। 'न्यू साउथ वैल्स तथा स्विस लैंड स्थित जंगलों में जीनस लोपोरिया नाम का 80-100 फुट उंचा एक वृक्ष पाया जाता है। इसके पते हृदया कार होते हैं। पत्तों में रेशेदार भूरे कांटे होते है।यदि कोई इनको रगड़ कर निकल जाए तो चार दिनतक उसे भंयकर जलन होती है।' एक ज्वलनशील वृक्ष का नाम 'फाल्ससिटेना है। इसके आपसाप यदि कोई माचिस की तीली जलाएं तो यह वृक्ष स्वंय जल उठता है। 'क्रोधी वृक्ष कैलीफोर्नियां में पाया जाता है। यह 10-से-20 फुंट उंचा होता है। यह वृक्ष अपना क्रोध खड़खड़ाहट एवं विचित्र तरह की सनसनाहट द्वारा प्रकट करता है। 'वैस्टइंडीज के सूडान इलाके में ब्राजील के घने मोरन प्लांट या 'मोरन ट्री'नामक एक विचित्र झाड़ीनुमा पौधा पाया जाता है।जिससे सारेदिन संगीत निकलता है और शाम होते ही यह संगीत रोने व कहराने की आवाज में बदल जाता है।

न्यायालय ही फैसला करेगा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री जी

मंजरी! हमारे घर में किस चीज की कमी है? तुम क्यों इस तरह विक्षिप्त सी घूमती रहती हो ? अच्छे कपड़े पहना करो। अच्छे ढंग से रहा करो। आए-गए का अच्छे ढंग से आव-भगत किया करो। बच्चों को भी साफ-सुथरा रखा करो। हमारे बच्चे आवारा बच्चों की तरह गली में घूमते रहते हैं। तुम नौकरानी की तरह बाल बिखेरे इधर-उधर चक्कर काटती रहती हो। इससे हमारे खानदान की इज्जत मिट्टी में मिल जाती है।

महिपाल! तुम्हें तेरा पहनावा पसंद नहीं है। मेरे चाल चलन पर तुम्हें कोई शंका है तो तुम ले आओ स्वर्ग की कोई उर्वशी। मुझसे तुम अधिक आशा मत रखना।

मंजरी! तुम हर बात को उल्टा समझती हो, तुम्हें कोई तुम्हारे हित की शिक्षा देता है तो उस पर भी बरस पड़ती हो। मेरी पहली पत्नी इतनी आज्ञाकारी मिलनसार, समझदार और स्वच्छता प्रिय थी कि मुझे कभी दो शब्द कहने की जरूरत नहीं पड़ी।

महिपाल! अपनी आज्ञाकारी धर्मपत्नी को क्यों गुजरने दिया। अमर बना लेते उसको। या फिर उसके शव में फिर से प्राण फूंक देते। जिससे तुम्हारा मेरे जैसी फूहड़ औरत से वास्ता नहीं पड़ता। फूटने के बाद हर आंख कटोरी जितनी बड़ी लगती है। कहने को मैं भी कह सकती हूं कि मेरा पहला पति मेरे पर इतना विश्वास करता था कि लाखों रूपये के नोट मेरे भरोसे छोड़ जाता था, जबकि तुम दो पैसे भी बाहर नहीं छोड़ते हो। चार - छह आने की चीज भी लानी हो तो तुम्हारो मुंहताज बनकर रहना पड़ता है।

भली औरत! जब तुम्हारा पहला पति तुम्हें इतने सम्मान से रखता था। बेहद विश्वास करता था तो उसे छोड़कर आने की क्या जरूरत थी? फिर उसी का घर आबाद करती। तुम जैसी सनकी औरत कहीं संतुष्ट नहीं हो सकती।

महिपाल! खबरदार जो मुझ पर ऐसी धौंस जमाई और मुझका इतने तीखे ताने दिए तो। लो चली मैं अपने मायके। संभालो अपने बच्चों को और घर को। थोड़ा-सा पैसा कमा लिया, एक कोठी बना ली और थोड़ा बिजनेस चल पड़ा तो दुनिया भर का घमंड आ गया।

रामू! जरा देखना मंजरी कहां जा रही है ? बाबू! मालकिन अपने मायके गई हैं। अच्छा मैं उसको लेने जाता हूं तुम घर पर बच्चों का ध्यान रखना। बाबू! आप लेने जाओगे तो बहू जी और सर पर चढ़ेगी। नहीं दो चार दिन में उनका नशा उतर जाएगा।

भैया! तू नहीं समझता वह मेरी दूसरी औरत है। दूसरी औरत के नखरे तो बर्दाश्त करने ही पड़ते है। बाबूजी बीबी जी कौन सी पहली बार ब्याही गई हैं वो भी तो आपसे पहले एक शादी कर चुकी है। जो औरत एक पति की होकर नही रह सकी, अब वह आपके साथ कैसे

रहेगी। भैया! कुछ भी हो, मेरी तो अपनी गर्ज है इसलिए उसे मनाकर लाना ही पड़ेगा। बच्चों को जो यहां छोड़ गई है। फिर कानून भी आजकले औरतों का पक्षधर है। आदमी चाहे निर्दोष हो फिर भी उसको हथकड़ियां पड़ जाती है। औरत चाहे सौ अपराध कर ले फिर भी आजाद हो जाती है। अच्छा बाबूजी! आप बहू जी को लेने जाओ। मैं बच्चों को स्कूल छोड़ के आता हू। बेचारा महिपाल ससुराल के मकान में घुस भी नहीं पाया था कि गालियों की बौछार शुरू हो गई। किसी तरह श्रीमती जी को मनाकर घर लाया कि बीबीजी फिर बिफर गई। महिपाल! चलो कोर्ट में मुझे तुमसे तलाक लेना है। मंजरी ? तुम मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ करने पर क्यों तुली हुई हो ? तुम क्या चाहती हो? तुम्हारे पाव पकड़ता हूं। तुम जैसे भी रहना चाहो रहो लेकिन यह तलाक-वलाक की बात मत करो।

सेठजी! सुन लो। मुझे घर में रखना है तो मैं अपनी मर्जी से जीवन जीउंगी। मैंने तुम्हारे रिश्तेदारों और दोस्तों की आव-भाव का ठेका नहीं लिया है। किसी को नाश्ता पानी करवाना हो तो होटल में ले जाइयेगा। मैं दिन भर चूल्हे चौके से नहीं बंधी रहूंगी। जब मेरो जी करेगा बाहर बाजार या पार्क में जाउंगी। जब मेरा मन होगा अपनी सहेलियों के पास जाउंगी। घर की सफाई, कपड़े धोना, खाना बनाना ये सब मेरे काम नहीं है। आपका नौकर खाना बना दे तो खाना खालो वरना ढाबे पर खाकर आ जाया करो। मैं खाना नहीं बनाउंगी। बच्चों की भी देखभाल की भी मेरी जिम्मेवारी नहीं होगी। अच्छा मंजरी तुम कुछ मत करना। सारे काम नौकर कर लेगा। जो काम वह नहीं कर सकेगा वह मैं खुद कर लूंगा। लेकिन तुम यह बताओ निठल्ली बैठी-बैठी करोगी क्या ? तुम जानती हो खाली दिमाग शैतान का घर है। अरे पगली! हर एक की अपनी अपनी जिम्मेवारी भी होती हैं आदमी कमाकर लाता है और घर और बच्चों को संभालती है। फिर तुम क्या गैर जिम्मेवारी का जीवन जिओगी ? महिपाल! जिम्मेवारी ही मुझे देनी है जो कमाने की जिम्मेवारी मुझे दे दो और घर परिवार का जिम्मा तुम ले लो। तुम कल ही मुझे खाली पड़ी दुकान पर सामान मंगवा दो और मैं तुम्हें कमाकर दिखाउंगी।

मंजरी हम जिस समाज में जी रहे है वहां औरतों का इस तरह दुकान पर बैठना अच्छा नहीं माना जाता। फिर भी तुम्हें ऐसा करने में संतोष मिलता है तो मुझे कोई एतराज नहीं है। सुनो रामू! कल ही बाजार से समान लाकर अपनी खाली वाली दुकान में भर देना। बाबू! उस दुकान में तो आप चक्की लगाने की बात कर रहे थे। अच्छा चक्की लगवा दो, तुम्हारी सेठानी मसाले, आटा पिसवाया करेगी। मालिक यह क्या करते हैं आप ? सेठानी जी वहां बैठेंगी बाबू। बड़ी तौहीन होगी आपकी और आपके खानदान की।

कोई बात नहीं राम! मुझे बड़ी बदनामी से बचने के लिए छोटी बदनामी सिर पर लेनी होगी। जैसे तेरी मालकिन का मन राजी रहे वैसा मुझे करना ही है। मालिक आप मर्द होकर

इस तरह जोरू का गुलाम क्यों बनते हो ? हम पढ़े-लिखे नहीं है। हमारा समाज अनपढ़ गंवार लोगों का है फिर भी हम औरत के गुलाम नहीं बनते ? हमारे यहां आदमी औरत दोनों बराबर कमाते हैं, फिर भी औरत को घर का सारा काम करना पड़ता है। और हमारी हाजरी भरनी पड़ती है। आज जितना दबते हो, बीबीजी आपको उतना ही दबाती रहती है।

रामू! औरत से क्या डरना है। अपनी इज्जत से डरना है। तू बैठने दे इसको दुकान पर। हम दोनों चौका-चूल्हा संभाल लेंगे। इतने पर भी यह शांति से जी लेने देगी तो हमारा घर-संसार तो बसा रहेगा।

अच्छा मंजरी ? फिर तुम दुकान पर बैठी-बैठी क्या करोगी ?

मैं पैसों का हिसाब रखूंगी, आर्डर दूंगी। क्या तुम्हारे खानदान की औरतें अनाज तौलती है, मैं बाजार से समान लाती अच्छी लगूंगी।

मंजरी! कुर्सी पर बैठना ही दुकानदारी करना नहीं है। अगर तुम्हें व्यापार करना है तो ठीक से करो, नहीं तो वैसे ही घर में बैठी रहो, तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम आराम से खाना खाओ और पलंग पर लेट जाओ। मेरी किस्मत फूटी थी जो मैं तुम्हारे जैसे पत्थर को उठा लाया।

महिपाल! तुम्हारे और मेरे रास्ते अब नहीं मिल सकते। चलो कोर्ट में अब जज ही फैसला करेगा।

संकट में निर्भय बनो

एक बार स्वामी विवेकानंद काशी में कहीं जा रहे थे। उस जगह एक तरफ भारी जलाशय दूसरी तरह उंची उंची दीवारें थीं। उस स्थान पर बहुत से बंदर रहते थे। बंदरों ने स्वामी जी को देखा और विकट चीत्कार के साथ उनके पैरों से चिपकने लगे। उन्हें निकट देखकर स्वामी भागने लगे। किंतु जितना वे जोर से दौड़ते, बंदर भी उतनी ही तेजी से दौड़ते। उनका उनसे छुटकारा पाना असम्भव प्रतीत होने लगा। ऐसे समय में एक अपरिचित ने आकर कहा बंदरों का सामना करो, भागो नहीं, ज्यों ही स्वामी जी उनके सामने खड़े हुए वैसे ही बंदर पीछे भाग गये।

गठिया

गठिया रोग मुख्यतः गलत आहार एवं व्यायाम न करने की वजह से होता है।

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग से गठिया रोग के होने से बचा जा सकता है।

गठिया लोगों में जाना -पहचाना रोग है। जिसे अनपढ़ व पढ़े लिखे सभी जानते है। यह उन क्षेत्रों के व्यक्तियों में ज्यादा पाया जाता है। जहां के पानी में फलोराइड की मात्रा ज्यादा होती है। राजस्थान प्रांत के कुछ जिले ऐसे हैं जहां के पानी में 'फलोराइड' की मात्रा 5 से 10 गुना ज्यादा है। वहां के 35-40 वर्ष के बाद लोग गठिया से ग्रस्त होने के कारण पैर टेढ़े मेढ़े, कमर व गर्दन झुक जाना आम बात है। भारत के गई प्रान्तों में यह समस्या पायी जाती गलत आहार एवं आराम तलब जीवन भी संन्धिवात एवं गठिया को बढावा देने में अग्रणी है। वैसे गठिया मुख्यतः प्रौढ़ावस्था का रोग है पर वर्तमान परिवेश में युवाओं में भी यह देखने में आने लगा है।

गठिया के लक्षणः-

1. जोडों में तीव्र पीड़ा व सूजन तथा लालियां।
2. कभी कभी हल्का ज्वर महसूस होना।
3. दुर्गन्ध युक्त पसीना आना।
4. लगातार कब्ज बने रहना।
5. अति अम्लता।
6. कमर का झुक जाना।
7. चलने, सीढ़िया चढ़ने में अधिक तकलीफ होती है।
8. शरीर के प्रत्येक जोड़ो में दर्द के साथ सूजन का होना।
9. सर्दी या बरसात में दर्द बढ़ना।

गठिया का कारण-

1. गरिष्ट भोजन का बार-बार या अधिक मात्रा में सेवन।
2. बिना भूख के भी खाते रहना।

3. अधिक तली-भुनी एवं वनस्पति घी से बने भोजन का सेवन।
4. श्रम, व्यायाम, शारीरिक कार्य के अभाव में भी यह रोग होता है।
5. एयर कंडिशन रूम में ज्यादा रहना तथा पसीने का न निकलना।
6. शुद्ध प्राकृतिक वातावरण के बजाय प्रदूषण युक्त वातावरण में रहना।
7. नियमित मिष्ठान्न खाना।
8. मैदे की रोटी खाना। ज्यादा मैदा युक्त खाद्य पदार्थ।
9. हरी सब्जियों, सलाद व फलों का भोजन में अभाव।
10. 50 वर्ष के बाद भी ज्यादा मात्रा में चने व अरहर की दालें खाना।
11. क्षारीय खाद्य पदार्थों का भोजन में अभाव।
12. मिर्च, मसाला, नमक व चीनी का अधिक सेवन।

सामान्यतया गठिया ऐसे लोगों को होता है। जिनके शरीर में अम्लीय प्रकृति का विजातीय पदार्थ जमा हो जाता है। हड्डियों के क्षारीय प्रकृति का होने के कारण अम्लीय विजातीय पदार्थ हड्डियों की तरफ जाने की प्रवृत्ति रखता है ताकि वह क्षार के सम्पर्क में आकर प्रभाव शून्य हो सके। इस प्रक्रिया में वह आम तौर पर जोड़ों में जमा होने लगते हैं और सूजन, दर्द आदि लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा सिद्धांत के अनुसार यही गठिया रोग के प्रमुख कारण है।

गठिया का प्राकृतिक उपचार :-

1. सप्ताह में 2-3 बार बाष्प स्नान देना चाहिए।
2. गर्म 'सहते हुए' पानी में दोनों पैर डुबों कर 15-20 मिनट रखें तत्पश्चात ठंडे पानी से धो लें।
3. सप्ताह में 2-3 दिन गीली चादर लपेट दें।
4. सप्ताह में 2-3 दिन तेल मालिश, मिट्टी में गडना।
5. नियमित प्रातः ठंडा कटिस्नान 5 से 10 मिनट।
6. गर्म- ठंडा सेंक, सुबह-शाम,4-6 चक्र दर्द की जगहपर।
7. एनिमा-नींबू + गुनगुने पानी का आवश्यकतानुसार।
8. स्थानीय सूती-ऊनी लपेट दर्द की जगह अथवा पूरे शरीर की स्पंज बाथ सप्ताह में 4 दिन।

यौगिक चिकित्साः-

1. अनुलोम विलोम-प्राणायाम,
2. सूर्यनमस्कार,
3. वज्रासन,
4. मंडूकासन,
5. पवन मुक्तासन,
6. पश्चिमोत्तानासन,
7. धनुरासन ाी बहुत उपयोगी है।
8. मेरूदण्ड के घुमावदार आसन-अर्धमत्स्येंद्रासन,सूर्यभेदी प्रायाणाम और भस्त्रिका ाी लाभप्रद है। इन सभी आसनों एवं उपचारों को नियमित करना चाहिए।

आहार चिकित्साः-

गठिया व सन्धिवात रोगियों को मुख्य रूप से नियमित क्षारयुक्त आहार जैसे-संतरा, मौसमी, पपीता, अनार, सेब, अमरूद, खीरा, टमाटर, चोकर समेत मोटे आटे की रोटी एवं हरी सब्जियों का ःरपूर सेवन करना चाहिए। फलों व सब्जियों के सूप एवं जूस सम्भव तो नियमित पीना चाहिए।

गठिया के रोगी को फलाहार 10 से 30 दिन तथा 5 से 10 दिन का उपवास किसी अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशन में करें। फलाहार अर्थात् केवल फल का सेवन स्वंय कर सकते हैं। नारियल पानी 'डाव' खरबूजा, तरबूज एवं मौसम का फल व सब्जियां उपयोगी हैं। अंकुरित मेथी ाी लाभदायक हैं।

सावधानियां-

1. योगाभयास एवं उपवास अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशन में प्रशिक्षण के बाद ही करना चाहिए अन्यथा लाभ के बजाय हानि की संम्भावना ज्यादा है।
2. गठिया रोगी को चाय, अचार, चीनी व चीनी से बने मिष्ठान्न नहीं खाना चाहिए।
3. मांस मछली, दालें, बासी ाोजन, वनस्पति घी से परहेज करना चाहिए।
4. गुटका, पान मसाला, शराब, बीड़ी का सेवन गठिया को बढ़ावा देता है। अतएव इससे ाी परहेज करें।
5. खाने के बाद दूध का सेवन न करे।

डॉ नन्दलाल

ज्वालामुखी के अंदर तीन दिन

-प्रस्तुति-अरुण कुमार तिवारी

यह एक साहसी वैज्ञानिक की विलक्षण साहस कथा है जिसने अपनी जान हथेली पर रखकर एक बड़ा ही खतरनाक प्रयोग किया था।

घटना बहुत पुरानी नहीं है। एक दिन ज्वालामुखी के बारे में पढ़ते समय प्रसिद्ध वैज्ञानिक ए. किचनर के दिमाग में यह विचार कौंधा कि जब ज्वालामुखी आग उगलना शुरू करता है तब उसके गर्भ में क्या होता है ? किचनर को इस तथ्य के उद्घाटन की धुन सवार हो गयी। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह स्वंय किसी ऐसे ज्वालामुखी के पेट में उतरेंगे, जो बस फूटने ही वाला हो और इस प्रकार स्वंय देखकर प्रामाणिक जानकारी करने का उन्होंने फैसला किया।

अब दिन रात किचनर इसी चिन्ता में रहने लगे। उन्होंने ज्वालामुखी से संबंधित अन्य प्राप्त विवरणों व अपने से पूर्व किए गए अमुक अभियानों की रिपोर्टों को पढ़ा। इन सबसे उन्हें ज्ञात हुआ कि उनसे पूर्व भी कई वैज्ञानिक ज्वालामुखी के गर्भ की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न कर चुके थे, किंतु सफलता किसी को नहीं मिली थी। किचनर पूर्व अभियानों की असफलता जानकर एक बार को हतोत्साहिक हुए, किंतु शीघ्र ही उनके दृढ़ निश्चय ने उनमें नवीन उत्साह का संचार किया। वह अपने साहसपूर्ण अभियान में जुट गए।

अपने प्रयोग के लिए उन्होंने कई ज्वालामुखियों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। गहन अध्ययन करने पर किचनर ने अपने प्रयोग के लिए स्ट्रांबोली नाम के ज्वालामुखी को चुना। यह ज्वालामुखी सिसली द्वीप यूरोप के उत्तर में है स्ट्रांबोली विश्व के उन गिने चुने ज्वालामुखीयों में से है जो अनवरत आग उगलते रहते हैं इसका आकार प्रकार हर वर्ष बदलता रहता है।

ज्वालामुखी के अंदर जाने का अंतिम निर्णय लेने के बाद किचनर ने अपने सहायकों को अपने अभियान के बारे में बतलाया। सहायक लोग एक बार तो चौंक गए, किंतु किचनर के दृढ़ निश्चय को देखकर उनके सामने एक जुट होकर कार्य करने के अलावा और रास्ता नहीं था। किचनर ने उन्हें सारी स्थिति व विवरण समझाए तथा इस अभियान पर काम चालू हो गया। ज्वालामुखी के अंदर का तापमान बहुत उंचा होता है। इसलिए एम्बेस्टास का एक हजार फुट लंबा रस्सा बनाया गया। इस धातु की यह विशेषता है कि यह उंचे तापमान पर भी नहीं पिघलती। किचनर ने अपने लिए वस्त्र, जूते, दस्ताने, सिर का कवर आदि भी इसी धातु के बनवाए। पत्थरों से सिर की रक्षा के लिए इस्पात का एक टोप भी बनवाया। आक्सीजन के कई मास्क भी तैयार किए गए और इन मास्कों को भी एम्बेस्टास से पूरी तरह ढक दिया गया।

जब सब तैयारी पूरी हो गया, तो एक दिन किचनर अपना साजो सामान लेकर स्ट्रांबोली पहाड़ की चोटी आ जुटे थे। स्ट्रांबोली समुद्र के बीच में स्थित ज्वालामुखी है। काफी मुश्किलों के बाद सामान चोटी तक पहुचाया गया।

समुद्र के किनारे खड़े लोग किचनर का साहस बढ़ाने के लिए हर्षध्वनि कर रहे थे। पूरी तरह तैयार होकर किचनर ज्वालामुखी के मुह पर जा पहुंचे और उन्हें चर्खी की सहायता से नीचे उतारा जाने लगा। बाहर खड़े लोग दम साध कर खड़े हो गए। मौत के मुहं में घुसते हुए किचनर भयभीत से थे। वह नहीं जानते थे कि उन्हें अंदर कहीं पैर रखने की जगह भी मिल पाएगी या नहीं ? अंदर क्या होगा ? कहीं उपकरण धोखा न दे जायें और वह ज्वालामुखी के भीतर ही रह जाएं ये प्रश्न उन्हें भयभीत कर रहे थे।

धीरे धीरे रस्सा नीचे उतरता जा रहा था। दहशत से भरे होने पर भी किचनर अपने चारों ओर की वस्तुओं को ध्यान से देख रहे थे। किचनर बताते हैं कभी मेरे आसपास की चट्टानी दीवार बिल्कुल काली दिखाई देती थी, तो कभी लाल या पीली। ज्वालामुखी की दीवार में चारों ओर सैंकडों छोटे बड़े छिद्र थे, जिनसे गंधक की लपटें निकल रही थी।

कुछ देर बाद किचनर ज्वालामुखी की तली में पहुंच चुके थे। तली लगभग आठ सौ फुट नीचे थी। नीचे बहुत से स्थान फटे हुए थे। इनमें गहन धुआं भरा हुआ था। भीतर का तापमान बहुत अधिक था। किचनर ने अपने पैर चट्टान पर टिकाएऔर इधर उधर घूमकर निरीक्षण करने लगे।

जहां किचनर उतरे थे उसके आसपास और भी गढ्ढे थे। इनमें से रह रह कर आग की लपटों का सिलसिला लगा हुआ था। उन्होंने नोट किया कि इस कार्य में विभिन्न गढ्ढों के समय में अंतर है। फिर तो अनुमान के आधार पर गढ्ढों के भीतर झांक झांक कर वह जानकारी प्राप्त करने लगे और चित्र उतारने लगे। उन गढ्ढों में खौलता लावा, रंग बिरंगी गैसें व घना धुआं था।

एक बार जब वह ऐसे ही एक गढ्ढे के भीतर देख रहे थे, तो सहसा गढ्ढे के लावे में तूफान आ उमडा। किचनर तुरन्त वहां से हट गए। अभी वह हटे ही थे कि भयंकर धमाका हुआ और उस लावे के कुएं में से लावे का सैंकड़ों फुट उंचा फव्वारा फूट पड़ा काफी उपर जाकर लावा उसी गढ्ढे में पुनः जा गिरा और उसका कुछ हिस्सा भीतर चारों ओर बिखर गया। ऐसा कई बार हुआ। लावे में से कुछ हिस्सा आठ सौ फुट से ऊपर उठकर समुद्र में भी गिरा था। की ओर बढ़ चला। हजारों लोग इस साहसी वैज्ञानिक के अभूतपूर्व अभियान को देखने

के लिए किचनर साहसपूर्वक ज्वालामुखी के भीतर इधर उधर निरीक्षण किए जा रहे थे। वह गैंसों, पदार्थों व खनिजों के नमूने ही एकत्र कर रहे थे। कुओं से क्षण प्रतिक्षण लावा निकलने के कारण उन्हें विशेष सावधानी बरतनी पड़ती थी।

अब किचनर को भीतर तीन घंटे हो चुके थे। वह काफी थक भी गए थे। थकान के कारण उनका साहस जवाब देता जा रहा था। तभी आक्सीजन समाप्त हो गयी और उन्हें गंधक के धुएं से सांस लेनी पड़ी। ऐसी स्थिति में और अधिक न टिक सकने की वजह से उन्होंने रस्सा हिलाकर अपने सहायकों को उपर, खीचने का संकेत दिया। सहायक संकेत पाते ही तुरंत उन्हे ऊपर खींचने लगे। गंधक के धुए में सास लेने की वजह से उपर पहुचते पहुंचते वह बेहोश हो चुके थे।

उनके ऊपर पहुंच कर बाहर आते ही उपस्थित जनसमूह ने हर्षध्वनि के साथ उनका स्वागत किया। किचनर के इस प्रकार जीवित लौट आने से लोगों में विशेष प्रसन्नता थी। एक वैज्ञानिक मौत के मुहं में तीन घंटे रहकर जीवित वापस आ गया। किचनर ज्वालामुखी में घुसकर सफलतापूर्वक वहां की जानकारी प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बने। उनके साहसपूर्ण अभियान से एक अज्ञात तथ्य ज्ञात हो गया। ज्वालामुखी के भीतर की स्थिति अब अज्ञात नहीं है।

Deals in :

* **Floppy Diskettes**
* **Computer Ribbon/Ink Cartridge**
* **Computer Stationery**
* **Refilling (All Kinds of Cartridge)**
* **General Oder Suppliers**
* **Corporate Gifts**
* **Computer Hardware**

Anand Jain

Mob: 9810434770

Phone: 22456060
20116061

DATEK

Datek Support Services

F-221/A, LAXMI NAGAR,
DELHI- 110092

hp intel EPSON G ORDER UPS TVS ELECTRONICS WIPRO Applying Thought

निराकार-आकार

जितनी हैं आकृतियां वे सब
निराकार की विकृतियाँ हैं।

जो अरूप अमूर्त निरंजन
बद्धकर्म रूपायित होता,
जो चिन्मय है स्वंय प्रकाशित
कर्ममुक्त उद्भासित होता,
जितनी भी प्रतिमाएं वे सब
मानव मन की प्रतिकृतियां हैं।

मंदिर मस्जिद मठ गिरजाघर
उसका कहीं विराम नहीं है,
तीर्थंकर पैगम्बर ईश्वर
उस अनाम का नाम नहीं है,
आगम वेद कुरान पिटिक सब
एकोहम् की स्वीकृतियां हैं।

परम ब्रह्म चैतन्य अदर्शन
दर्शन का विस्तार बन गया,
शून्य स्वयं वह किन्तु गणित का
भौतिक मूलाधार बन गया,
स्वंय अलख, पर जड़-चेतन में
व्यक्त उसी की आवृतियां हैं।

-कन्हैया लाल सेठिया

1. दूसरों के धन का अपहरण करना सबसे बड़ा पाप है।
2. पराधीन मनुष्य सुख के आनन्द को किस प्रकार जान सकता है।
3. भय की भांति ही साहस भी संक्रामक होता है।

कहानी

सत्य की जीत

○ साध्वी मंजुश्री जी महाराज

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में कई शक्तिशाली योद्धा हुए हैं। उनमें महाराणा प्रताप के एक सत्यनिष्ठ सहयोगी वीर पुरूष रघुपति सिंह का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। अकबर ने रघुपति सिंह को पकड़ने के लिए इनाम की भी घोषणा की हुई थी परन्तु रधुपति सिंह अकबर के सैनिकों के काबू नहीं आये। पर नियति बलवान है रघुपति का पुत्र गंभीर रूप से बीमार हो गया।

वह अपने पुत्र को एक बार देखना चाहते थे। उसकी घर जाने की इच्छा थी, पर पकड़े जाने का भी खतरा था। घर के चारों ओर गुप्तचर खड़े रहते थे। लेकिन रघुपति ने घर जा कर पुत्र को देखने का निश्चय कर ही लिया। और घर की ओर चल पड़े। घर के पास पहुंचते ही उसने पहरे दारों से कहा-तुम मुझे पकड़ना चाहते हो, मैं अभी आता हूं एक बार अपने पुत्र को देख लूं, वह मरणासन्न है फिर पकड. लेना।

उसकी सच्चाई जान कर पहरेदार सैनिकों ने रघुपति को घर में प्रवेश करने की अनुमति दे दी। रघुपति ने अपने पुत्र को देखा, उसके सिर पर हाथ फेरा, मुहँ चूमा और घर के बाहर आकर सैनिकों के सामने आत्मसमपर्ण कर दिया। जब रघुपति को बेड़ियों में जकड़कर रघुपति को महाराजा अकबर के सामने पेश किया गया तो सभी हैरान हो गए कि यह योद्धा कैसे पकड़ा गया। सैनिकों ने बादशाह को सारी स्थिति से अवगत करवाया कि किस प्रकार रघुपति सिंह ने अपनी गिरफ्तारी दी।

अकबर ने पूछा- रघुपति! जब तुम घर गये वहां से छुपकर भाग सकते थे। तुम्हें पता था कि पकड़े जाने पर मौत की सजा मिलेगी। फिर तुमने ऐसा क्यों नहीं किया ? रघुपति ने बड़ी वीरता से उत्तर दिया- ''बादशाह'' हम राजपूत हैं सदा अपने वचन को निभाते है। राजपूत कभी विश्वास घात नहीं करते। **प्राण जाय पर वचन न जाये।** हमने वचन दिया और उसी के अनुसार मैने किया। यह सुनकर राजा अवाक् रह गया और रघुपति सिंह को तुरन्त रिहा कर दिया।

✠✠✠ सत्यमेव जयते् ✠✠✠

कहानी

किसी को जीतना है तो हृदय के प्यार से जीतो

○ साध्वी समता श्री

महर्षि दयानंद सरस्वती एक बार गंगा के किनारे एक कुटिया में ठहरे हुए थे। उनकी कुटिया से कुछ ही कदम दूर दूसरी कुटिया में एक साधु रहता था। उस साधु के मन में महर्षि के प्रति घृणा के भाव थे। वह प्रतिदिन महर्षि की कुटिया पर आता और गालियों की बौछार करता। वे साधु की गालियां सुनते और मुस्कुरा देते। यह बात उनके भक्तों को बहुत अखरती थी। उनसे स्वामी जी का अपमान सहा नहीं जाता था लेकिन स्वामी जी की आज्ञा थी कि किसी को बोलना नहीं है एक दिन उनका मन स्वतः ही बदल जाएगा।

एक दिन एक भक्त ने महर्षि की सेवा में फल और मिठाइयां भेजी।
महर्षि ने उसमें से पके पके फल और अच्छी अच्छी मिठाइयां निकाल कर एक भक्त को देते हुए कहा जाओ उस कुटिया वाले महात्मा जी को दे आओ।

भक्त ने विस्मित होकर पूछा ऋषिवर उस महात्मा को जो आपको रोज गालियां देता है। हां उन्हीं महात्मा जी को दे आओ।

महर्षि के आदेशनुसार भक्त उन महात्मा जी की कुटिया में गया। फल और मिठाई रखकर बोला महात्मा जी स्वामीदयानंद सरस्वती जी ने ये आपके लिए भेजे है

स्वामी जी का नाम सुनते ही महात्मा जी भड़क गये बोले नालायक ? तुमने सुबह सुबह उस पाखण्डी का नाम सुना दिया। अब तो मुझे दिन भर अन्न जल भी नसीब नहीं होगा। उठा तेरी फल और मिठाई उसने किसी और के लिए भेजी होगी। मैं तो उसे रोज गालियां देता हूं, उसका अपमान करता हूं। भला वह मेरे लिए फल और मिठाईंया क्यों भेजने लगा ?

भक्त ने आकर महर्षि को सारा वृतान्त कह सुनाया। महर्षि ने हंसते हुए कहा- जाओ ये उन्हीं को देकर आओ और उन्हें कहना कि स्वामी जी ने कहा है कि आप प्रतिदिन मेरे उपर मेहरवानी करके जो अमृत वर्षा करते हैं उससे आपको कमजोरी तो आती ही है इसलिए फल खाना अति आवश्यक है। ताकि आपकी अमृत वर्षा करने की शक्ति बनी रहे।

भक्त ने पुनः महात्मा की कुटिया पर जाकर स्वामी जी का संदेश सुनाते हुए फल व मिठाई रख दी।

महर्षि की उदारता व क्षमाशीलता से महात्मा पानी पानी हो गया। और दौड़ता हुआ स्वामी जी की कुटिया में आया और उनके चरणों में गिर पड़ा। पश्चाताप के आंसुओं से महर्षि के चरण धोता हुआ बोला ऋषिवर मुझ अपराधी को क्षमा करें। मैंने आपको समझने में बहुत बड़ी भूल की थी। आप तो क्षमा के अवतार हैं, प्रेम के सागर हैं, साक्षात् देवता हैं, सच्चे संत हैं। महर्षि ने उन्हें उठाकर गले लगा लिया। उनके सद्व्यवहार से नहीं बल्कि उनकी भावना बदल गई इसलिए। अब वह प्रतिदिन प्रवचन सुनने आता, उनकी सेवा करता और उनका परम भक्त बन गया।

मासिक राशि भविष्यफल–अगस्त 2007

डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेषः–

व्यापार में अत्यधिक परिश्रम करना होगा, तत्पश्चात् गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। शत्रु सिर उठायेंगे पर आपको नुकसान नहीं पहुंचा पायेंगे। कोई मंगल कार्य भी होने की संभावना है। छोटी-बड़ी यात्राओं के भी योग बन सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटु अनुभव होंगे।

वृषः–

व्यापार व्यवसाय में धनागमन के आसार हैं। व्यापार व्यवसाय सम्बन्धी यात्राओं में कष्ट व अवरोध हो सकता है। परिवार जनों में मन मुटाव सम्भव है। मानसिक संतुलन बना रहेगा। व्यापार का आधिक्य होगा। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा।

मिथुनः–

व्यापार व्यवसाय में लाभ के कई अवसर आयेंगे। हां नई योजना अवश्य बनेंगी। नये लोगों से मेल-जोल भी होगा। आपसी विचार विमर्स में सावधानी रखें। संतान की और से विद्या तथा कैरियर की चिन्ता बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा।

कर्कः–

व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वाद्ध कुछ अच्छा तथा उत्तरर्ध मंगल फल देन वाला है। व्यय की अधिकता रहेगी। नई योजनाओं से तुरन्त लाभ की उम्मीद न करें। परिवार में अशांति बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन भी परिवार की अशांति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेगा।

सिंहः–

व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वाद्ध शुभ तथा उत्तरार्ध व्ययाधिक्य वाला होगा। पारिवारिक असंतुष्टता बनी रहेगी। कोई मांगलिक कार्य मानसिक शांति दे पायेगा। कोई भूमि, भवन या वाहन की खरीद-फरोस्त का प्रसंग भी बन सकता है।

कन्याः–

व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कन्या राशि के जातकों के लिए सामान्य रहेगा। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार में किसी समझौते के अच्छे नतीजे सामने आ सकते हैं सेहत के प्रति लापरवाही न बरतें। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। कोई संदिग्ध व्यक्ति नुक्शान पहुंचा सकता है।

तुला :–

तुला राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह में आय कम और खर्च अधिक होने की स्थिति रहेगी । बहुत परिश्रम करने के पश्चात् सफलता मिलेगी। पारिवारिक सहयोग सामान्य मिलता रहेगा। मास के उत्तरार्घ में कोई समस्या आ सकती है तथा कोई यात्रा भी करनी पड़ सकती है। स्वास्थ्य की ओर से चिन्ता रहेगी।

वृश्चिक :–

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय में लाभा-लाभ की स्थिति रहेगी। पारिवारिक सहयोग मिलेगा तथा मित्र भी सहायक होंगे। आपसी विश्वास व टकराव से बचें। वेश-भूषा तथा अलंकरण खरीदनें में पैसा खर्च करेंगे। बुद्धिपूर्वक निणर्य लेंगे। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। रक्त-पित्त विकार सम्भव है।

धनु :–

धनु राशि के जातकों के लिए यह माह परिश्रम साध्य लाभ वाला होगा। धन का अपव्यय भी सम्भव है। यात्राएं होंगी किन्तु उन्हें अर्थ पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। अपना मानसिक संतुलन बनाए रखें। क्रोध तथा उत्तेजना पर काबू रखें। दूसरों पर अधिक विश्वास करना अहित कर होगा। दाम्पत्य जीवन में माधुर्य बनायें रखें।

मकर :–

मकर राशि के जातकों के लिए व्यवसाय-व्यापार में आय-व्यय का सन्तुलन बना रहेगा। बन्धु जनों का सहयोग मिलेगा। बौद्धिक क्षमता का विकास होगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न होने की खुशी मिलेगी। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा।

कुम्भ :–

कुम्भ राशि के जातकों के लिए संघर्ष के बावजूद धनागम के अवसर आते रहेंगे। नई योजनाएं भी बनेंगी तथा कार्यान्वित भी होगी। वाद-विवाद होगें किन्तु सफलता भी मिलेगी।सेहत नरम रहेगी। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा।

मीन :–

मीन राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ देने वाला होगा। परिश्रम तथा उत्साह बना रहेगा। नई योजनाएं बनेंगीं। सफलता भी मिलेगी। मित्रों तथा परिवार जनों से लाभ होगा। स्वास्थ मध्यम रहेगा। दाम्पत्य जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा।

इति शुभमू

गिरगिट रंग क्यों बदलता है ?

बच्चों तुमने अक्सर एक दूसरे को यह कहते सुना होगा कि क्यों गिरगिट की तरह रंग बदलते हो। तुम्हारे मन में यह जानने की इच्छा हुई होगी कि यह गिरगिट रंग क्यों बदलता है। गिरगिट अपने शरीर का रंग कैसे बदलता है, यह हम तुम्हें बताते हैं।

गिरगिट को आसानी से कहीं भी देखा जा सकता है। जंगल में भी और अपने घर के आस-पास भी। गिरगिट की चमड़ी भी सेल से बनी होती है। इन सेलों में रंग के तत्व होते हैं और इन्हीं तत्वों की वजह से चमड़ी को रंग मिलता है।

गिरगिट में ये रंगीन सेल उसकी पारदर्शी चमड़ी के नीचे परत में मौजूद होते हैं। बाहरी परत पीले और लाल सेलों के बनी होती है। इसके नीचे की परत में खास तरह के छेद होते हैं। इन्हीं छेदों में से नीली और सफेद रोशनी निकलती है। और आखिरी परत यानी सबसे अंदर की परत मेलनोफोर "सेल" से बनी होती है। इसी में 'मेलनिन' नामक काले तत्व मौजूद होतें हैं।

मेलनोफोर सेल में छोटी सकरी नलिकाएं होती हैं। इन्हें अग्रेजी में टेंटकल्स कहते हैं। ये नलिकाएं उपर की दोनों परत से गुजरती उभरती है। इन्हीं के जरिए मेलनिन कण उपर आते है। ये वे सेल हैं जिनकी वजह से गिरगिट चमड़ी के रंग पर नियंत्रण रखता है।

जब गिरगिट आराम कर रहा होता तब मेलनिन कण निचली परत में जमा रहते हैं। सफेद रोशनी बीच की परत से आती रहती है और गिरगिट पीली या लाल रंग की छटा लिए रहता है। जब मेलनोफोर सेल उद्धेलित होते हैं तब कण बीच की परत तक पहुंचते हैं। इसकी वजह से सफेद रोशनी नहीं दिखाई देती। और इसी वजह से गिरगिट नीले और पीले का मिश्रण यानी हरा दिखाई देता हैं या फिर नीले और लाल रंग का मिश्रण दिखाई देताहै।

जब गिरगिट और ज्यादा उत्तेजित हो जाता है तो ये काले कण नलिकाओं के जरिए पूरी तरह उपर उभरते हैं। इसी वजह से गिरगिट गहरा भूरा दिखाई देता है। ऐसे समय में निचली दोनों परतों का अपना रंग मानों पूरी तरह गायब हो जाताहै।

ये तो रही गिरगिट की चमड़ी बदलने की आदत। लेकिन बच्चो, अब सवाल ये उठता है कि आखिर गिरगिट क्यों और किस अवस्था में अपना रंग बदलता रहता है।

पहला जबाव तो ये है कि कुछ हद तक रंग तो हम भी अपना बदलते हैं। मसलन जब हम गुस्से में होते हैं तो हम कहते हैं कि देखो कैसा आगबबूला हो गया है या लाल हो गया है या फिर लाल पीला हो गया है। यानी एक हद तक हमारे अंदर के भाव हमारे चेहरे पर उजागर होते हैं। और जैसे कि पढ़ा होगा हर सजीव तत्वों में भावनाएं होती है। मनुष्य और जानवरों में फर्क इतना है कि आदमी अपने बड़बोलेपन से अपनी भावनाएं बारबार

प्रकट करता रहता है। और जहां तक गिरगिट का सवाल है जब तक वह अपने गुस्से को डर को या और किसी भावना को प्रकट करना चाहता है तो वह अपना रंग ही बदल देता है।

दूसरा कारण है कि उसकी चमड़ी का रंग आस-पास के वातावरण के तापमान पर भी निर्भर करता है। कुछ हद तक ये भी बात हमारे साथ जुड़ी हुई है। बहुत ज्यादा गरमी में हमारे चेहरे का रंग भी बदल जाता है। उस समय वह कुछ कालापन लिए होता है। तीसरा कारण है कि चूंकि गिरगिट अपना रंग बदल सकता है इसलिए वह अपनी चमड़ी का रंग बदलता है। ऐसा दुश्मन से बचने के लिए भी करता है।

संवेदना समाचार

श्रीमान दयाचन्द जी जैने नोएडा का अभी पिछले दिनों स्वर्गवास हो गया। आप बड़े सज्जन और धार्मिके वृत्ति के व्यक्ति थे। आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज के परम भक्त थे। जैन मंदिर आश्रम में जब भी कोई समारोह होता आप अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शशि जैन के साथ जरूर पहुंचते। इन दिनों आप का स्वास्थ्य गड़बड़ रहने लग गया फिर भी गुरूदेव के दर्शन करने पहुंचने की भावना रहती।

आप के दिवंगत होते ही पुत्रों ने फोन द्वारा आश्रम में सूचना दी। गुरूदेव श्री ने शशि बहिन आदि परिवार को दर्शन दिये तथा संसार के स्वरूप को समझाते हुए फरमाया। आनेवाला जाने की टिकिट कटवाकर लाता हैयह सृष्टि का शाश्वत नियम है। उनके पीछे शोक संताप करने की बजाय उनकी आत्मा की शांति और सद्‌गति की कामना करनी चाहिए क्योंकि आत्मा का रिश्ता कोई एक जन्म का नहीं होता। जन्म जन्मांतर तक चलता है। अब जैन साहब चले गये तो पीछे से आपका परिवार सारी जिम्मेवारी निभाएगा ऐसा विश्वास है।

जैन साहब करीब 70 वर्ष के थे। पीछे जैन साहब भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। दो पुत्र मनीष, यती तथा दो पुत्रियां विभा बहिन और ऋतु बहिन। इसी तरह दो पुत्र बधुएं कविता बहिन, मीना बहिन दो दामाद अरविंद तथा अनुज जैन आदि पूरा परिवार खूब संस्कारी है। पूरे परिवार ने गुरूदेव का मार्मिक संदेश सुना बड़ी सांत्वना मिली।

जैन मंदिर आश्रम आप के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगम आत्मा के प्रति सद्‌गति की कामना करता हूं।

समाचार दर्शन

राजधानी समाचार :- परम पूज्य गुरूदेव महामहिम आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज, परम पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज अपने धर्म परिवार के साथ सान्नद विराजमान हैं। धर्म की प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। चार्तुमास का समय जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है। वैसे-वैसे मौसम का मिजाज भी बदल रहा है। तवे की तरह तप्त धरती पर जब रिमझिम करती वर्षा की बूंदे गिरती है तो मानों पावों में घुंघरूबांधे नन्हें बच्चे छमछम नाच रहे हों। पुरवाई उस मधुर आवाज को जन-जन के कानों तक पहुंचा कर मानों सबको जगा रही हो कि जागो चातुर्मास लग रहा है। सारे कामों के साथ धर्म ध्यान के लिए समय भी निकालना जरूरी है। गुरूपूर्णिमा के साथ ही चातुर्मास की शुरूआत हो जायेगी। गुरूपूर्णिमा के पुण्य अवसर पर मानव मंदिर केन्द्र के भव्य हाल में कार्यक्रम का आयोजन होगा।

मानव मंदिर केन्द्र द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियां प्रगति पर हैं। मानव मंदिर मिशन के बच्चों को इस बार सरस्वती बाल मंदिर में पढ़ने के लिए भेजा गया है। ताकि भारतीय संस्कृति के साथ-साथ बच्चों का अध्ययन अध्यापन भी अच्छा हो सके।

सेवा-धाम हॉस्पिटल भी एक क्वालीफाइड डॉक्टरों की टीम के साथ जन-जन की सेवा के लिए आतुर है। पूज्य गुरूदेव के आदेशानुसार, विद्यार्थियों और बुजुर्गों को 25 प्रतिशत डिस्काउंट पर ईलाज उपलब्ध कराया जाये तथा गरीबी रेखा से नीचे के लोगों को फ्री ईलाज उपलब्ध कराया जायेगा।

सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी महाराज अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ दिल्ली मानव मंदिर पधार चुकीं हैं। आपका पंजाब में सुनाम, लुधियाना, अहमदगढ़ आदि शहरों में पधारना हुआ। सभी क्षेत्रों में धर्म की अच्छी प्रभावना हुई।

गुरुपूर्णिमा-पर्व के पावन अवसर पर रूपरेखा पाठकों को

मानव मंदिर मिशन की ओर से

हार्दिक शुभ कामनाएं।

-मानव मंदिर गुरूकुल के शिक्षकों के विदाई समारोह के अवसर पर परम पूज्य गुरूदेव व साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज के साथ साध्वी समताश्री जी, श्री अरूण तिवारी, श्रीमती प्रीति देवा, श्री नवोनाथ झा, श्रीमती उमा शर्मा, एवं श्रीमती सुनन्दा शिवादास।

-मानव मंदिर गुरूकुल के विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों को भावभिनी विदाई दी। तत्पश्चात गुरूदेव व महासती के चरणों में शिक्षकों के साथ बैठकर आशीर्वाद प्राप्त किया।